१७ मई २००७, कुल पृष्ठ : ४, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान कोई अलग नहीं होते। यदि सही दिशा में पुरुषार्थ करे तो प्रत्येक जीव भगवान बन सकता है।

ह्न तीर्थंकर भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ, पृ. ८४

वर्ष : ३०, अंक : ४ सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : २५१ रुपये

मई (द्वितीय), २००७ प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : २५ रुपये

मुमुक्षु एवं विद्वत् सम्मेलन सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 7 मई, 2007 तक मुमुक्षु एवं विद्वत्सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में सम्पूर्ण देश के अनेक मुमुक्षु मण्डलों के प्रतिनिधि एवं मुमुक्षु भाईयों ने भाग लिया। महाविद्यालय के स्नातकों की उपस्थिति इस सम्मेलन की विशेषता रही।

सम्मेलन का उद्घाटन श्री अनन्तभाई अमोलखचन्द शेठ मुम्बई द्वारा किया गया।

प्रथम सत्र में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने सम्मेलन के प्रमुख विषय 'वर्तमान में युवा पीढ़ी में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण कैसे हो ?' की आवश्यकता का उल्लेख करते हुये अपना मंतव्य प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् विभिन्न वक्ताओं को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया।

इस सत्र में पण्डित धन्यकुमारजी भौंरे कारंजा, पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित चन्दुभाई, पण्डित बाबूभाई मेहता, ब्र. सुमतप्रकाशजी आदि विद्वानों ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये।

द्वितीय सत्र में श्री हंसमुख बेचरदास मोदी मुम्बई, श्री सुरेन्द्रजी जैन उज्जैन, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, श्री सतीशजी मोदी मुम्बई, श्री विश्वलोचनजी जैनी नागपुर, श्री जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुरेशजी जैन गुना आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये।

तृतीय सत्र में श्री रतनचन्दजी होशंगाबाद, कु. जीनल शाह मुम्बई, पण्डित जिनचन्दजी शास्त्री कोल्हापुर, श्री प्रेमचन्दजी राघौगढ़, विदुषी राजकुमारी बेन जयपुर, विदुषी हंसाबेन जबेरी आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

चतुर्थ सत्र में पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री ज्ञानचन्दजी जैन गढाकोटा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, प्रो. रतनचन्दजी होशंगाबाद, श्री मुकेशजी करेली, श्रीमती रेखाबेन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि ने अपने मार्मिक उद्बोधन दिये।

समापन सत्र को संबोधित करते हुये सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि चूँकि हर परिवार, समाज एवं क्षेत्र की परिस्थितियाँ अलग-अलग प्रकार की है; अत: इन सब वर्गों के युवाओं में धार्मिक संस्कारों हेतु उन-उन स्तरों पर कार्य किया जाना आवश्यक है; अत: धार्मिक संस्कारों के लिये सर्व प्रथम अपने से शुरुआत करनी चाहिये और फिर अपने आस-पास के परिकर को भी संस्कारित करने का प्रयास करना चाहिये। तभी सही रूप में प्रचार-प्रसार संभव है।

सम्मेलन के सभी सत्रों का संचालन देवलाली ट्रस्ट के अध्यक्ष व ट्रस्टी श्री मुकुन्दभाई खारा एवं श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई ने किया।

विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न

छिन्दवाड़ा : यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती, गुरुदेव जयन्ती एवं करणानुयोग शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

दोनों जयन्तियों के अवसर पर अहिंसा स्थली गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में प्रात:काल बड़ी संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर पूजन की। तत्पश्चात् गुरुदेव श्री के सी.डी. प्रवचन एवं डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के प्रासंगिक प्रवचन हुये। संध्याकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

शिक्षण-शिविर में ब्र. यशपाल जैन जयपुर एवं डॉ. श्रीमती उज्जवला बेन शहा ने सुबह, दोपहर एवं रात्रि में तीनों समय करणानुयोग पर विशेष कक्षायें लीं। 8 दिनों में 48 कक्षाओं के माध्यम से सभी ने जैन गणित का सूक्ष्मता से अध्ययन किया।

डॉ. टडैया सम्मानित

देवलाली : यहाँ दिनांक 6 मई को मुमुक्षु सम्मेलन के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद द्वारा बाल साहित्य के लेखन हेतु **डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया** को पण्डित टोडरमल स्मृति पुरस्कार के अन्तर्गत शॉल, श्री फल, प्रशस्ति-पत्र, मेमेन्टो एवं पाँच हजार रुपये की नकद राशि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आपको पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा भी पाँच-पाँच हजार रुपये की राशि समर्पित की गई।

- डॉ. सत्यप्रकाश जैन, मंत्री-विद्वत्परिषद

सम्पादकीय –

समाधि और सल्लेखना

४

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

शंका :ह्न जब मृत्यु के समय कान में णमोकार मंत्र सुनने–सुनाने मात्र से मृत्यु महोत्सव बन जाती है तो फिर जीवनभर तत्त्वाभ्यास की क्या जरूरत है? जैसा कि जीवन्धर चरित्र में आई कथा से स्पष्ट है। उस कथा में तो साफ–साफ लिखा है ह्न ''महाराज सत्यन्धर के पुत्र जीवन्धर कुमार ने एक मरणासन्न कुत्ते के कान में णमोकार मंत्र सुनाया था, जिसके फलस्वरूप वह कुत्ता स्वर्ग में अनेक ऋद्धियों का धारक देव बना।''

समाधान :ह्न यह पौराणिक कथा अपनी जगह पूर्ण सत्य है, पर इसके यथार्थ अभिप्राय व प्रयोजन को समझने के लिए प्रथमानुयोग की कथन पद्धति को समझना होगा। एतदर्थ पण्डित टोडरमल कृत मोक्षमार्ग प्रकाशक का निम्नकथन दृष्टव्य है ह्न

''जिसप्रकार किसी ने नमस्कार मंत्र का स्मरण किया व साथ में अन्य धर्म साधन भी किया, उसके कष्ट दूर हुए, अतिशय प्रगट हुए; वहाँ उन्हीं का वैसा फल नहीं हुआ; परन्तु अन्य किसी कर्म के उदय से वैसे कार्य हुए; तथापि उनको मंत्र स्मरणादि का फल ही निरूपित करते हैं।...''

यदि उपर्युक्त प्रश्न को हम पण्डित टोडरमल के उपर्युक्त कथन के संदर्भ में देखें तो उस कुत्ते को न केवल णमोकार मंत्र के शब्द कान में पड़ने से स्वर्ग की प्राप्ति हुई; बल्कि उस समय उसकी कषायें भी मंद रहीं होंगी, परिणाम विशुद्ध रहे होंगे, निश्चित ही वह जीव अपने पूर्वभवों में धार्मिक संस्कारों से युक्त रहा होगा। परन्तु प्रथमानुयोग की शैली के अनुसार णमोकार महामंत्र द्वारा पंचपरमेष्ठी के स्मरण कराने की प्रेरणा देने के प्रयोजन से उसकी स्वर्ग प्राप्ति को णमोकार मंत्र श्रवण का फल निरूपित किया गया है, जो सर्वथा उचित ही है और प्रयोजन की दृष्टि से पूर्ण सत्य है। जिनवाणी के सभी कथन शब्दार्थ की मुख्यता से नहीं, वरन भावार्थ या प्रयोजन अभिप्राय की मुख्यता से किए जाते हैं। अतः शब्द म्लेच्छ न होकर उनका अभिप्राय ग्रहण करना चाहिए, अभिधेयार्थ ही ग्रहण करना चाहिए।

यद्यपि लोकदृष्टि से लोक विरुद्ध होने से तत्त्वज्ञानियों के भी आंशिक राग का सद्भाव होने से तथा चिर वियोग का प्रसंग होने से मृत्यु को अन्य उत्सवों की भाँति खुशियों के रूप में तो नहीं मनाया जा सकता, पर तत्त्वज्ञानियों द्वारा विवेक के स्तर पर राग से ऊपर उठकर मृत्यु को अमृत महोत्सव जैसा महशूस तो किया ही जा सकता है।

सल्लेखना का स्वरूप :ह्न

यद्यपि सन्यास, समाधि व सल्लेखना एक पर्याय के रूप में ही प्रसिद्ध हैं, परन्तु सन्यास समाधि की पृष्ठभूमि है, पात्रता है। सन्यास संसार, शरीर व भोगों से विरक्तता है और समाधि समताभाव रूप कषाय रहित शान्त परिणामों का नाम है तथा सल्लेखना जैनदर्शन का पारिभाषिक शब्द है, जो दो शब्दों से मिलकर बना है। सत् + लेखना = सल्लेखना। इसका अर्थ होता है ह्न सम्यक् प्रकार से काय एवं कषायों को कृश करना।

आगम में सल्लेखना के स्वरूप का उल्लेख ह्न

''सल्लेखना का एक अर्थ यह भी है ह्न सत् + लेखना अर्थात् अपने त्रिकाली स्वभाव को सम्यक् प्रकार से देखना''

ह्न शान्तिपथ प्रदर्शक : जिनेन्द्र वर्णी, पृष्ठ–३५९

''काय एवं कषायों को भले प्रकार से लेखन करना अर्थात् कृश करना, कमजोर करना सल्लेखना है।''

ह्न सर्वार्थसिद्धि ७/२२ आ. पूज्यपाद

''जरारोग (वृद्ध अवस्था) इन्द्रिय व शरीरबल की हानि तथा षट्आवश्यक धर्म क्रियाओं का नाश होने पर सल्लेखना होती है।

ह्न राजवार्तिक ७/२२

इसीप्रकार सागारधर्मामृत १/१० तथा समाधिमरणोत्साह दीपक १७/१८, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय श्लोक १७५ आदि में सल्लेखना का स्वरूप एवं आवश्यक्ता का विशद विवेचन है।

प्रश्न :ह्न क्या सल्लेखना आत्महत्या है?

उत्तर :ह्न सल्लेखना और आत्महत्या में जमीन–आसमान जितना अन्तर है। इस सम्बन्ध में अत्यन्त युक्तिसंगत शंका–समाधान आचार्य पूज्यपाद प्रस्तुत करते हैं ह्न

''**शंका ह्न** चूँकि सल्लेखना में अपने अभिप्राय से आयु आदि का त्याग किया जाता है, इसलिए यह आत्मघात हुआ?

समाधान ह्न यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि सल्लेखना में प्रमाद का अभाव है। 'प्रमत्तयोग से प्राणों का वध करना हिंसा है', परन्तु इसके प्रमाद नहीं है, क्योंकि इसके रागादिक नहीं पाये जाते। राग, द्वेष और मोह से युक्त होकर जो विष और शस्त्र आदि उपकरणों का प्रयोग करके उनसे अपना घात करता है, उसे आत्मघात का दोष प्राप्त होता है, परन्तु सल्लेखना को प्राप्त हुए जीव के रागादिक तो हैं नहीं, इसलिए इसे आत्मघात का दोष प्राप्त नहीं होता।'' **ह्न सर्वार्थसिद्धि ७/२२**

आत्मख्याति के रचयिता आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं ह्न

मरणेऽवश्यंभाविनि कषायसल्लेखनातनूकरणमात्रे।
रागादिमन्तरेण व्याप्रियमाणस्य नाऽत्मघातोऽस्ति॥

अर्थात् मरण अवश्यम्भावी है ह्न ऐसा जानकर कषाय का त्याग करते हुए, राग–द्वेष के बिना ही प्राणत्याग करनेवाले मनुष्य को आत्मघात नहीं हो सकता।

उपर्युक्त श्लोक की टीका करते हुए टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

यहाँ कोई कहे कि संन्यास में तो आत्मघात का दोष आता है?

समाधान ह्न सल्लेखना करनेवाला पुरुष जिस समय अपने मरण को अवश्यम्भावी जानता है, तब संन्यास अङ्गीकार करके कषाय को घटाता है और रागादि को मिटाता है; इसलिए **आत्मघात** का दोष नहीं है। **(क्रमशः)**

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार ०७

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

मैं ऐसे अनेक लोगों को जानता हूँ कि जो भाषा के स्तर पर तो बड़े अध्यात्मी बनते हैं; पर...।

एक बार हम एक ऐसे ही महापुरुष के पास उनकी तबियत पूँछने गये तो क्या देखते हैं कि जब हमने पूँछा कि कैसी तबियत है आपकी ?

तपाक से बोले ह्न क्या हुआ है मुझे, मैं तो एकदम ठीक हूँ; बुखार तो इस पड़ौसी देह को आया है।

अरे भाई ! जब हम व्यवहारनय से पूछ रहे हैं तो तुम भी उसी व्यवहारनय से जवाब दो न ! हम तो देह की ही तबियत पूछने आये है? लेकिन उनका वह अध्यात्म सिर्फ एक मिनिट भी नहीं टिकता है, अगले ही क्षण से यह रामायण आरम्भ हो जाती है कि कमर में दर्द होता है, पैरों में दर्द होता है, डॉक्टर ने यह बताया है, इतनी गोलियाँ दी.....। उनके जेब की तलाशी लो तो जेब में दस-पाँच गोलियाँ मिल जायेगी। अरे भाई ! तुम्हें यदि कुछ नहीं हुआ है तो ये गोलियाँ किसलिए हैं ?

ऐसे नकली अध्यात्मिक बनने की बात मैं आपसे नहीं कहता हूँ। अरे भाई ! बाहर में भाषा तो व्यवहार की ही बोली जायेगी, लेकिन अंदर में स्वीकृत होना चाहिये कि मैं पर का स्वामी नहीं हूँ, कर्त्ता-धर्त्ता नहीं हूँ, भोक्ता भी नहीं हूँ। इसीप्रकार पर भी मेरा स्वामी नहीं है, कर्त्ता-धर्त्ता नहीं है और भोक्ता भी नहीं है।

मुनीम कहता है ह्न हम इस भाव में नहीं दे सकते। ऐसे तो हमारा दिवाला निकल जायेगा। यदि कल तक पैसे नहीं आये तो मेरे से बुरा कोई नहीं होगा; लेकिन अंदर से जानता है कि दिवाला मेरा नहीं, सेठ का निकलेगा।

यदि वह यह कहने लग जाय मेरे बाप का क्या जाता है, दिवाला निकलेगा तो सेठ का निकलेगा; जितना लेना है, ले जा; जिस भाव ले जाना है, ले जा। तो क्या होगा ?

व्यवहार में तो व्यवहार की ही भाषा बोलनी पड़ेगी, मैं भाषा बदलने के लिए नहीं कहता हूँ, मैं तो अंदर के भावपरिवर्तन की बात करता हूँ। ये जो देहादि परपदार्थों में एकत्व-ममत्वबुद्धि, कर्तृत्व-भोक्तृत्व बुद्धि है; वह अगृहीत मिथ्यात्व है और यह अगृहीत मिथ्यात्व इस जीव के अनादि से है।

इसप्रकार जीव-अजीव तत्त्वसंबंधी भूल की चर्चा करके अब आस्रव-बंध तत्त्वसंबंधी भूल की बात करते हैं ह्न

आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवन्त तिन्हैं निरवेरे।

आस्रव घना दु:ख देनेवाले हैं और बुद्धिमान जीव उनसे निवृत्त होते हैं। तात्पर्य यह है कि सभी प्रकार के शुभाशुभ आस्रवभाव घना दु:ख देनेवाले हैं। कोई भी आस्रव सुख देनेवाला नहीं है।

रागादि प्रगट ये दु:ख दैन, तिन ही को सेवत गिनत चैन।
शुभ-अशुभ बंध के फल मँझार, रति-अरति करै निजपद विसार।।

यद्यपि सभी प्रकार के रागादिभाव प्रगट दु:ख देनेवाले हैं; तथापि अज्ञानी जीव उन्हीं का सेवन करता हुआ स्वयं को सुखी मानता है।

यह अज्ञानी जीव अपने आत्मा को भूलकर शुभ बंध के फल में रति और अशुभ बंध के फल में अरति करता है।

आस्रव और बंध दो-दो प्रकार के होते हैं ह्न पुण्यास्रव और पापास्रव, पुण्यबंध और पापबंध। दोनों ही दु:ख के कारण हैं। लेकिन हमें पुण्यास्रव और पुण्यबंध सुखकर लगते हैं और पापास्रव और पापबंध दुखकर लगते हैं। पुण्य के फल में जो अनुकूलता मिलती है, स्वर्गादिक मिलते हैं; वे सब अच्छे लगते हैं।

जब यह सुनिश्चित हो गया कि स्वर्ग के संयोग, पाँच इन्द्रियों के विषय-भोग ह्न ये सभी दु:खरूप ही हैं, दु:ख ही हैं; तब जिस पुण्य के उदय में ये भोग प्राप्त होते हैं, स्वर्ग प्राप्त होता है; वह पुण्य भी दु:ख का कारण हुआ और वह पुण्य जिन शुभभावों से बँधता है; वे शुभभाव भी दु:ख के कारण हुये। जब शुभभाव भी दु:ख का कारण है और अशुभभाव भी दु:ख का कारण है तो शुभ और अशुभ ह्न ऐसे दो भेद करने से क्या लाभ है ? अत: यही ठीक है कि शुभाशुभ भाव अशुद्धभाव हैं।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव और अमृतचन्द्रदेव ने प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार के अन्तर्गत आनेवाले शुभपरिणाम-अधिकार में यह बात बहुत विस्तार से स्पष्ट की है।

ऊपर से तो हम बोल देते हैं कि **आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवन्त तिन्हैं निरवेरे**; लेकिन आस्रव-बंध अनन्त दु:ख देनेवाले हैं ह्न यह बात कौन जानता है ? अन्तर की गहराई से यह बात कितने लोगों को स्वीकार है ? भाषा के स्तर पर तो बात आ जाती है; किन्तु बुद्धि की गहराई में जाकर सबकुछ गोलमाल लगता है। यह सब अगृहीत मिथ्यादृष्टि की आस्रव-बंधतत्त्व संबंधी भूल है। **(क्रमश:)**

जिसके माथे जन्म-मरण की तलवार लटक रही हो और वह संयोगों में राजी हो रहा हो तो वह पागल ही है।

ह्न दृष्टि का निधान, पृ. ४६

१७ मई २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

हार्दिक बधाई !

गजेन्द्र जैन

रामनरेश जैन

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री गजेन्द्र जैन बड़ामलहरा एवं श्री रामनरेश (नीरज) जैन खड़ैरी ने यू.जी.सी. नई दिल्ली द्वारा लेक्चररशिप के लिये आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में सफलता अर्जित की; एतदर्थ महाविद्यालय परिवार हार्दिक बधाई देते हुए आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आवश्यकता

नई दिल्ली : आत्मार्थी ट्रस्ट द्वारा संचालित आत्म साधना केन्द्र के प्रबन्धन एवं ट्रस्ट की समस्त गतिविधियों को संचालित करने हेतु एक सहायक प्रबन्धक की आवश्यकता है।

दिगम्बर जैन, स्नातक उत्तीर्ण, हिन्दी-अंग्रेजी भाषा, एकाउण्ट एवं कम्प्यूटर के जानकार व्यक्ति सम्पर्क करें। तीन वर्ष से अधिक का जिन्हें अनुभव हो, उन्हें विशेष प्राथमिकता दी जायेगी। वेतन योग्यतानुसार। आवास की सुविधा उपलब्ध है। सम्पर्क करें ह्न सुमतिकुमार सेठिया एफ-1, यू/176 उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली-34, मो.- 09312218886

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

३१ मई से ६ जून	**लन्दन**	**प्रवचनार्थ**
७ जून से २२ जुलाई	**अमेरिका**	**प्रवचनार्थ**
३ से १२ अगस्त	**जयपुर**	**शिक्षण शिविर**
८ से १५ सितम्बर	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
१६ से २६ सितम्बर	**मुम्बई**	**दशलक्षण पर्व**

आगामी शिविर...

1. हिंगोली (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा दिनांक 28 मई से 3 जून, 2007 तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद आदि विद्वानों द्वारा बालकों को संस्कारित किया जायेगा।

2. भिण्ड : दिनांक 28 मई से 7 जून, 2007 तक श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट देवनगर, भिण्ड द्वारा बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर ग्वालियर, चम्बल संभाग एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न 61 स्थानों पर लगाया जायेगा।

3. नागपुर : यहाँ अमरावती, वर्धा, अकोला आदि जिलों के लगभग 30 स्थानों पर दिनांक 2 जून से 10 जून तक बाल संस्कार ग्रुप शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न होगा।

4. स्तवनिधी (कर्ना.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में दिनांक 4 जून से 14 जून तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन ब्र.यशपालजी के निर्देशन में पण्डित जिनचन्दजी आलमान एवं जितेन्द्रजी राठी के सहयोग से सम्पन्न किया जायेगा।

5. ईसरी (गिरिडीह-झारखण्ड) स्थित उदासीन आश्रम में आगामी आषाढ माह की अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर विशिष्ट विद्वानों के सहयोग से विशेष आयोजन किया जा रहा है। क्षेत्र पर आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है। इच्छुक व्यक्ति अपने आने की पूर्व सूचना निम्न पते पर देवें। **ह्न सम्पतलाल छाबड़ा**

श्री पार्श्वनाथ दि. जैन शान्ति निकेतन उदासीन आश्रम,
ईसरी बाजार, गिरिडीह-झारखण्ड
मो. 09830647854, 06558-233158

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७